क्रान्ति की नई चेतना

अशोक मानव

मानव समाज मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए एक व्यवस्था स्थापित करता है जिसे सरकार कहा जाता है। और जब सरकार व्यवस्था को अव्यवस्था में ले जाती है तो समाज का आन्दोलन करना पड़ता है। यह आन्दोलन जब जैसे का तैसा का रूप ले लेता है तो उसे क्रान्ति कहते हैं। क्रान्ति शब्द का नाम आते ही शरीर किसी से लड़ने को तैयार हो जाता है। इसके पालन में शरीर बलिदान गौरव का प्रतीक माना जाने लगता है। तोड़-फोड़ इसमें भावना प्रदर्शित करने के लिए आवश्यक बन जाता है। जिस जगह पर क्रान्ति होती है उस समय हर तरफ भय का वातावरण छाया रहता है। हर व्यक्ति डरा रहता हैं कहीं कब क्या हो जाये कुछ पता नहीं रहता हैं, बदलाव का नशा विनाशा को नहीं देखता। क्रान्ति के सामने मजबूरी होती है जब व्यवस्था की रक्षा कहीं से भी नहीं हो पाती तो इसके बोलना चाहता हैं यह आन्दोलन मानव मूल्यों की बनायी व्यवस्था को जरूर स्थापित करता है पर प्रकृति को नहीं। सरकार एक व्यवस्था है जिसको मान्यता समाज देता है। समाज की इस व्यवस्था को चलाता है। व्यवस्था कुछ होती है कार्य किसी और तरीके से होता हैं व्यवस्था और व्यवहार में कोई साम्य नजर नहीं आता है। यह व्यवस्था खूब चलती है पर प्रकृति में नहीं। प्रकृति की वयवस्था इस व्यवस्था से हटकर हैं प्रकृति की व्यवस्था में जो घटना घटेगी, उसका परिणाम जरूर होगा। मानव प्रकृति का सर्वाधित लाभ ले रहा हैं, इसलिए प्रकृति की किसी भी घटना का प्रभाव सर्वाधिक मानव समाज पर ही पड़ता है मानव समाज को छोड़कर अन्य जीव प्राणी की घटना का कारण न जान पाने के कारण कष्ट कम होता हैं मानव समाज को सब कुछ पता होता है इसलिए घटना का कारण ज़ान लेने के बाद कष्ट के साथ पछतावा अलग से होता है। इसलिए किसी भी तरह के कार्य को करने से पहले उस विषय पर चिन्तन कर लेना आवश्यक होता है।

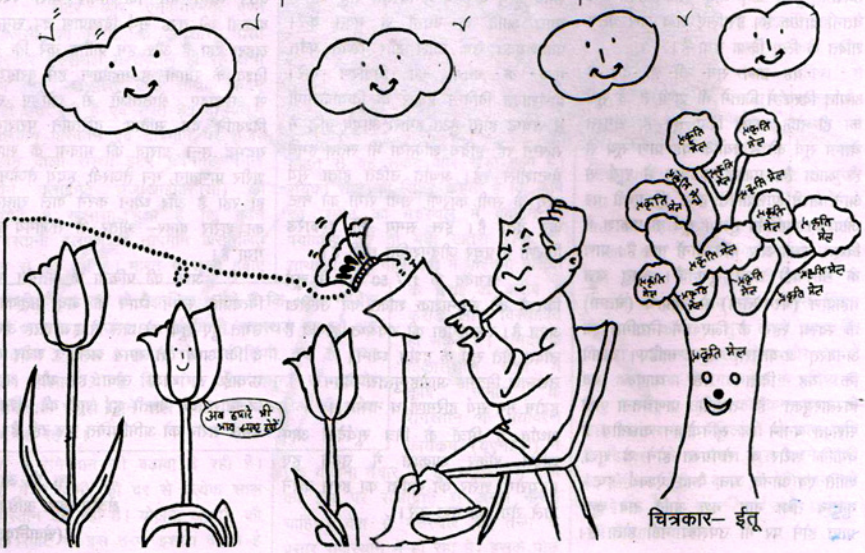

चित्रकार- ईतू